International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

*शोध पत्र*

# कार्य संतुष्टि और शिक्षण मनोवृत्ति के बीच संबंधः एक आलोचनात्मक विश्लेषण

**कपिल देव[1] और डॉ. कौशल शर्मा[2]**

[1,2]शिक्षा विभाग आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

**Corresponding Author: *कपिल देव**

**सार**

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के बड़ौत क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच संबंध का पता लगाना है।

इस उद्देश्य के लिए ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के स्कूलों से 500 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों, 250 पुरुष शिक्षकों और 250 महिला शिक्षकों का चयन किया गया। माध्यमिक विद्यालयों के चयन के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण विधि जबकि पुरुष और महिला शिक्षकों के चयन में कोटा नमूनाकरण विधि का उपयोग किया गया। कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच संबंध का पता लगाने के लिए 0.01 और 0.05 स्तरों पर महत्व की टी–परीक्षण तकनीक और दो चर के बीच सहसंबंध का उपयोग किया गया था। अध्ययन के बाद यह पाया गया कि पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध भी पाया गया ।

**Manuscript Information**

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 10-06-2024
- **Accepted:** 15-07-2024
- **Published:** 21-07-2024
- **IJCRM:**3(4); 2024: 58-60
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

**How to Cite this Manuscript**

कपिल देव, डॉ. कौशल शर्मा. कार्य संतुष्टि और शिक्षण मनोवृत्ति के बीच संबंधः एक आलोचनात्मक विश्लेषण. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(4): 58-60.

**कीवर्ड:** नौकरी से संतुष्टि, शिक्षण रवैया, ग्रामीण स्कूल, शहरी स्कूल, माध्यमिक विद्यालय शिक्षक।

## प्रस्तावना

भारतीय परंपरा 'गुरु' को सर्वोच्च सम्मान और दर्जा देती है जो अंधकार को दूर करने वाले, व्यक्ति और समाज को प्रबुद्ध करने वाले और आध्यात्मिकता के साथ ज्ञान रखने वाले माने जाते हैं। इसलिए प्रारंभ से ही शिक्षक की पूजा और सम्मान किया जाता रहा है।

आधुनिक परिदृश्य में शिक्षक की अपेक्षित भूमिका ने नये आयाम ग्रहण किये हैं। एक शिक्षक को न केवल निर्देश देना होता है, बल्कि शिक्षक को बच्चे के संपूर्ण विकास का भी ध्यान रखना होता है। वास्तव में उसे सभी विद्यार्थियों के लिए सब कुछ होना चाहिए, एक दार्शनिक जो उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है, एक चिकित्सक जो उनके शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में चिंतित होता है, एक मानसिक स्वच्छता विशेषज्ञ जो उन्हें सावधानीपूर्वक मानसिक स्वास्थ्य की ओर ले जाता है, एक नैतिकतावादी जो उनकी सहायता करता है और उन्हें प्रोत्साहित करता है।

एक शिक्षक और शिक्षण के जीवन में मनोवृत्ति बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण एक भावनात्मक प्रवृत्ति है। यह एक सीखी हुई भावनात्मक प्रतिक्रिया है, जो शिक्षण के पक्ष या विपक्ष में निर्धारित है। शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक और नकारात्मक हो सकता है।

नौकरी की संतुष्टि से तात्पर्य एक सामान्य दृष्टिकोण से है जो नौकरी के कारकों, सामाजिक कारकों, मौद्रिक कारकों, समूह संबंध आदि के प्रति विभिन्न विशिष्ट दृष्टिकोणों से उत्पन्न होता है। शिक्षण पेशे में सफलता के लिए नौकरी की संतुष्टि एक महत्वपूर्ण कारक है। एक शिक्षक कार्य से संतुष्ट या असंतुष्ट हो सकता है।

शिक्षक के शिक्षण रवैये के साथ उसकी कार्य संतुष्टि का भी गहरा संबंध है। यदि कोई व्यक्ति मानता है कि उसका पेशा उसके मूल्यों और विश्वासों को साकार कर रहा है, तो वह शिक्षण पेशे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करेगा और अधिक संतुष्टि प्राप्त करेगा। इसके विपरीत, यदि किसी शिक्षक पर गैर–शिक्षण कार्यों का बोझ डाला जा रहा है, कम भुगतान दिया जा रहा है, निर्णय लेने में उसकी



© 2024 कपिल देव, डॉ. कौशल शर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भागीदारी की कमी है, प्रशासनिक समर्थन की कमी है तो उसका अपने पेशे के प्रति नकारात्मक रवैया विकसित होगा और नकारात्मक रवैया बढ़ेगा। शिक्षक के असंतोष की डिग्री. इस प्रकार शिक्षण पेशा पेशे के प्रति अधिक अनुकूल दृष्टिकोण की मांग करता है।

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य न केवल नौकरी की संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के संबंध को प्रकाश में लाना है, बल्कि शिक्षकों में सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करना है ताकि वे सभी बाधाओं के बावजूद अपने काम से संतुष्ट महसूस कर सकें। इस प्रकार यह अध्ययन एक स्वस्थ समाज और बेहतर शिक्षित राष्ट्र के निर्माण में सहायक होगा।

### अध्ययन का उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि के स्तर का विश्लेषण करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि के स्तर का विश्लेषण करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि के स्तर की तुलना करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रवृत्ति का पता लगाना।
5. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रवृत्ति का पता लगाना।
6. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के बीच शिक्षण
7. दृष्टिकोण की तुलना करना।
8. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच संबंध का पता लगाना।

### परिकल्पना

$H_01$: माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की लिंग के आधार पर कार्य संतुष्टि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$H_02$: लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$H_03$: लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

### चर

**आश्रित चर**

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि।
2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का शिक्षण दृष्टिकोण।

**स्वतंत्र प्रभावित करने वाली वस्तुएँ**

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का लिंग

### अध्ययन का परिसीमन

1. अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के बड़ौत क्षेत्र तक सीमित है।
2. अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष और महिला शिक्षकों तक ही सीमित है।
3. उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के बड़ौत क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के केवल 500 शिक्षक नमूने में शामिल हैं।

### अनुसंधान विधि

अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, मानक सर्वेक्षण विधि को सबसे उपयुक्त विधि पाया गया क्योंकि जांच मुख्य रूप से वर्तमान में मौजूद स्थितियों और संबंधों से संबंधित थी। वर्तमान जांच अनुसंधान की मानक सर्वेक्षण पद्धति के लिए आवश्यक चरणों और विशेषताओं का उपयोग करने का प्रयास करती है।

### नमूना और नमूनाकरण विधि

वर्तमान जांच में नमूने में कुल 500 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक, 250 पुरुष शिक्षक और 250 महिला शिक्षक शामिल थे। इन शिक्षकों का चयन विभिन्न ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के स्कूलों से किया गया था। अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए माध्यमिक विद्यालयों के चयन में यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का उपयोग किया गया है जबकि पुरुष और महिला शिक्षकों के चयन में कोटा नमूनाकरण विधि का उपयोग किया गया है।

### सांख्यिकीय तकनीकें

अनुसंधान समस्या की प्रकृति और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए एकल माध्य के महत्व के लिए टी–परीक्षण का उपयोग पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण की तुलना के लिए किया गया था और पियर्सन के उत्पाद क्षण सहसंबंध और सहसंबंध के महत्व के लिए टी–परीक्षण का उपयोग किया गया था। पुरुष और महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच संबंध का परीक्षण करना।

पहली परिकल्पना ( $H_01$) जो कहती है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की लिंग के आधार पर कार्य संतुष्टि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

तदनुसार सभी पुरुष शिक्षकों और सभी महिला शिक्षकों के बीच 'टी' परीक्षण की गणना की गई और यह 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण पाया गया। यह इंगित करता है कि सभी पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि काफी भिन्न है। इसका मतलब है कि पहली परिकल्पना ( $H_01$) खारिज कर दी गई है और यह निष्कर्ष निकाला गया है कि लिंग नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित कर रहा है।

दूसरी परिकल्पना ( $H_01$) जो बताती है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग के आधार पर शिक्षण दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। तदनुसार सभी पुरुष शिक्षकों और सभी महिला शिक्षकों के बीच 'टी' परीक्षण की गणना की गई और यह 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण पाया गया। यह बताता है कि सभी पुरुष शिक्षकों और महिला शिक्षकों के बीच शिक्षण रवैया काफी भिन्न है।

इससे पता चलता है कि दूसरी परिकल्पना ( $H_02$) को खारिज कर दिया गया है और यह निष्कर्ष निकाला गया है कि लिंग शिक्षण दृष्टिकोण को प्रभावित कर रहा है।

तीसरी परिकल्पना ($H_03$) जो दावा करती है कि माध्यमिक विद्यालयों में काम करने वाले शिक्षकों की लिंग के आधार पर नौकरी की संतुष्टि और शिक्षण रवैये के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। तदनुसार शून्य परिकल्पना $H_0$ का परीक्षण करने टी = 1.42 जो शून्य परिकल्पना की अस्वीकृति को दर्शाता है। इसलिए $H_0=0$ को अस्वीकार कर दिया गया है और हम अनुमान लगाते हैं कि सभी पुरुष शिक्षकों की ''नौकरी संतुष्टि'' और ''शिक्षण दृष्टिकोण'' के बीच नकारात्मक सहसंबंध मौजूद है। इसका मतलब है कि अधिक से अधिक कार्य संतुष्टि से उनमें शिक्षण रवैया कम होता जाएगा।

तीसरी परिकल्पना ( $H_03$) जो बताती है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में काम करने वाले शिक्षकों की लिंग के आधार पर नौकरी की संतुष्टि और शिक्षण रवैये के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। तदनुसार शून्य परिकल्पना $H_0$ का परीक्षण करने के टी=9.84 जो शून्य परिकल्पना की अस्वीकृति दर्शाता है। इसलिए $H_0$ को अस्वीकार कर दिया गया है और हम निष्कर्ष निकालते हैं कि सभी महिला शिक्षकों की ''नौकरी की संतुष्टि'' और ''शिक्षण दृष्टिकोण'' के बीच सकारात्मक संबंध मौजूद है। इसका मतलब है कि अधिक से अधिक कार्य संतुष्टि से उनमें उच्च शिक्षण दृष्टिकोण पैदा होगा।


© 2024 कपिल देव, डॉ. कौशल शर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

### परिणाम

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों का कार्य संतुष्टि स्तर महिला शिक्षकों के कार्य संतुष्टि स्तर से अधिक पाया गया है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षकों का शिक्षण रवैया अधिक अनुकूल पाया गया है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच संबंध काफी नकारात्मक पाया गया है।
4. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच संबंध काफी सकारात्मक पाया गया है।

### परिणामों की व्याख्या और चर्चा

1. पहली खोज से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक है। इस अंतर का कारण यह है कि एक ओर जहां सामाजिक परिवर्तनों के कारण महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं इसलिए अब वे केवल शिक्षण पेशे तक ही सीमित नहीं हैं और अन्य पेशे भी चुन रही हैं। दूसरी ओर बढ़ती बेरोजगारी ने पुरुषों को सकारात्मक सोच के साथ शिक्षण का पेशा चुनने के लिए मजबूर कर दिया है। अतः पुरुष शिक्षकों का कार्य संतुष्टि स्तर महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक है।
2. दूसरी खोज से पता चलता है कि पुरुष शिक्षकों का शिक्षण रवैया महिला शिक्षकों के शिक्षण रवैये की तुलना में अधिक अनुकूल है। अगर हम कारणों पर विचार करें तो पाते हैं कि महिला शिक्षक पेशेवर और घरेलू दोहरी भूमिका निभाती हैं। कई बार पारिवारिक जीवन की कठिनाइयों के कारण वे शिक्षण पेशे के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हो पाते और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित नहीं कर पाते। इसलिए सरकार व प्रबंधन को सक्रियता बढ़ाने वाले कार्यक्रम आयोजित कर महिला शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। साथ ही बेहतर योगदान एवं भागीदारी के लिए उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए।
3. तीसरी खोज से पता चलता है कि पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण का सहसंबंध काफी नकारात्मक है। यह निष्कर्ष बताता है कि अपेक्षित सकारात्मक स्तर प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयास करने चाहिए जैसेय उपयुक्त अवसरों पर पुरस्कार एवं पारितोषिक के माध्यम से पहचान दिलाना, स्वयं से संबंधित कौशल विकसित करना, नवोन्मेषी कार्यक्रमों की शुरुआत करना, नौकरी में भागीदारी बढ़ाना, उन्हें गैर–शिक्षण कार्यों से दूर रखना और उन्हें विशेष प्रोत्साहन देना आदि।
4. चौथी खोज से पता चलता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में काम करने वाली महिला शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि और शिक्षण दृष्टिकोण के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है। चूँकि, महिलाओं का रुझान पारंपरिक रूप से इस पेशे की ओर है, इसलिए शिक्षण के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक है। इसलिए, शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उनके शिक्षण दृष्टिकोण को बनाए रखने और बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए।

### शोध का महत्व

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, शोधकर्ता के पास सरकार, नीति निर्माताओं, पाठ्यक्रम योजनाकारों, स्कूल संगठन, प्रबंधन और समग्र रूप से शिक्षकों के लिए कुछ सिफारिशें हैं।

1. शिक्षण में मनोवृत्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक शिक्षक का रवैया न केवल कक्षा में उसके व्यवहार को प्रभावित करता है, बल्कि उसके छात्रों के व्यवहार को भी प्रभावित करता है, इसलिए शिक्षकों की भर्ती के समय सरकार को शिक्षण रवैये के परीक्षण को महत्व देना चाहिए। इस तरह समाज की प्रगति और कल्याण के लिए बेहतर शिक्षकों की पहचान की जा सकती है।
2. इस शोध अध्ययन से पता चलता है कि सरकार के लिए यह अनिवार्य होना चाहिए कि वह शिक्षकों की नकारात्मक कार्य स्थितियों, उनके जीवन की गुणवत्ता को बदलने और पुरस्कार संरचना में सुधार के लिए गंभीर दृष्टिकोण अपनाए और सक्रिय योजनाएँ तैयार करे। शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास के लिए पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कक्षा, शिक्षण सहायक सामग्री जैसी बुनियादी सुविधाओं में सुधार के प्रयास भी किए जाने चाहिए।
3. ज्ञान और शिक्षण दृष्टिकोण को बढ़ाने के लिए सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी रखे जाने चाहिए और उनका उद्देश्य न केवल ज्ञान और शिक्षण योग्यता में सुधार करना बल्कि उनमें वांछनीय शिक्षक जैसे गुणों को विकसित करना भी होना चाहिए।
4. अध्ययन से पता चलता है कि पुरुष शिक्षकों का शिक्षण रवैया महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक है। यह उचित कारणों का पता लगाकर महिला शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण के विकास के लिए व्यापक गुंजाइश देता है।
5. शिक्षकों को पाठ्यक्रम तैयार करने की प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। इस प्रकार उनकी भागीदारी में शिक्षण एवं पर्यावरण से जुड़ी वास्तविक समस्याएं शामिल होंगी। इससे उन्हें संतुष्टि मिलेगी और उनके शिक्षण दृष्टिकोण में वृद्धि होगी।
6. शिक्षकों को अनुकूल शिक्षण दृष्टिकोण विकसित करने के लिए पढ़ाने की अपनी क्षमता में सुधार करने और विषय पर महारत हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। उन्हें यह भी सीखना चाहिए कि स्थिति की जरूरतों के अनुसार अपने व्यवहार को कैसे बदलना है।

### संदर्भ

1. मलिकी, ए.ई. शिक्षण प्रक्रिया परामर्श निहितार्थ के प्रति येनागोआ स्थानीय सरकारी क्षेत्र बायेलसा राज्य नाइजीरिया में शिक्षकों का रवैया। इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंस, 2013;वॉल्यूम। (2):61-63.
2. मंगल, एस.के. मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, दूसरा संस्करण। पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, भारत। 2012
3. राव के.एस. शिक्षण पेशे के प्रति माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन, इंजीनियरिंग, आईटी और सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2012;वॉल्यूम 2(6):13-23.

**Creative Commons (CC) License**

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.



© 2024 कपिल देव, डॉ. कौशल शर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/